नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

.....

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र का आयोजन

आध्यात्मिक चेतना का प्रकटीकरण है संत साहित्य - डॉ. उदय प्रताप सिंह वर्धा, 3 फरवरी 2020: संत साहित्य सामान्य जन के सरोकार का साहित्य है। यह अच्छा मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है जिसमें विनम्रता मुखर होती है। यह साहित्य आध्यात्मिक चेतना का प्रकटीकरण है। यह विचार हिंदुस्तानी अकादमी प्रयागराज के अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप सिंह ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र



की ओर से 'संत साहित्य का प्रदेय' विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान में बोल रहे थे। तुलसी भवन, महादेवी वर्मा सभागार में शुक्रवार को हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपित प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की।

स्वागत वक्तव्य हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने दिया। संचालन साहित्य विद्यापीठ के प्रो.अवधेश कुमार ने किया।

डॉ. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि संत परंपरा लोक भाषा और लोक साहित्य में है। हमारे वेद ज्ञान देते हैं, संत साहित्य ज्ञान का प्रसारण करता है। उन्होंने संत कबीर, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, तुलसीदास, रसखान और तिमल संत आलवार एवं नायनार आदि के योगदान और रचनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इनके साहित्य में तप, तपस्या, विनम्रता, समता, समरसता और प्रेम का भाव प्रकट होता है। उनका कहना था संतों ने कर्म से सकारात्मक विचारधारा का संचार



किया और पराधीनता में संतों की इसी शक्ति ने हमें बचाया। स्वाभिमान की रक्षा और लोगों में चेतना का संचार यह संतों का महत्वपूर्ण प्रदेय है। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि संतों के साहित्य और जीवन दर्शन का परिचय पाठ्यक्रमों में होना चहिये।

अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपित प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि जीवन को समंजित करने का काम संत साहित्य में प्रदर्शित होता है। संतों ने साहित्य निर्माण के लिए नहीं लिखा अपितु जीवन निर्माण के संदर्भ में दुख से मुक्ति देने का यत्न किया। उन्होंने कहा कि वाल्मीिक से तुलसी और गांधी तक पर दुख दूर करने और आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देना संतों का जीवन लक्षण है। कुलपित शुक्ल ने अलग अलग राज्यों में संत परंपरा का उदाहरण देते हुए कहा कि संत साहित्य दैन्य, दीनता और दासता से मुक्ति दिलाता है और संत साहित्य का यह प्रदेय आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि समता युक्त और करुणा सम्पन्न समाज निर्माण में संत साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।

स्वागत वक्तव्य में प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि दुसरे के दुख से द्रवित होना संत का परिचय है। दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. उदय प्रताप सिंह का स्वागत कुलपति प्रो. शुक्ल ने शाल, श्रीफल और सूत माला से किया।

कार्यक्रम में साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर, डॉ. रामानुज अस्थाना,डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. वीर पाल सिंह यादव, डॉ. संजय तिवारी, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. प्रकाश त्रिपाठी सहित शोधार्थी एवं विद्यार्थी बडी संख्या में उपस्थित थे।